पायरेसी : नवाचार
चोरी और भविष्य की शक्ल तय करते बेयर क़ानून

मेंसो ह्यूज

अप्रैल 2003, इंटरनेट पर एक धमाकेदार ख़बर है 'ऐपल कंपनी ने आई ट्यूंस का एक म्यूज़िक स्टोर शुरू कर दिया है'। इस स्टोर में हर तरह के कलाकारों का संगीत उपलब्ध है और ख़ास बात यह है कि इस संगीत को आप मनचाहे ढंग से प्राप्त कर सकते हैं। यानी यह स्टोर हर वक़्त खुला है। यही नहीं अगर आप पूरे ऐल्बम की बजाय अपना कोई ख़ास पसंदीदा गीत ही सुनना चाहते हैं तो वह भी हाज़िर है। है न एक ज़बरदस्त चीज़! लेकिन इस तरह के म्यूज़िक स्टोर का विचार उतना धमाकेदार नहीं था। संगीत उद्योग इसे बढ़ा-चढ़ा कर पेश कर रहा था। यह बात 1987 की है जब फ़्रॉन हाफ़र संस्थान ने ऑडियो कंप्रेशन एल्बो रिद्म पर काम करना शुरू किया। इस संस्थान को यूरोपीय संघ के यूरेका कार्यक्रम के तहत चलाया जाता है। यह मिशन 1994 में पूरा हुआ और इसे एमपीईजी 1/2 ऑडियो लेयर 3 का नाम दिया गया। आमतौर पर इस फ़ॉरमेट को हम एमपीथ्री के रूप में जानते हैं। पहले संगीत का ऑनलाइन आदान-प्रदान करना बेहद मुश्किल काम था। इसका कारण यह था कि गानों के लिए सैकड़ों मेगाबाइट्स की ज़रूरत पड़ती है और इन मेगाबाइट्स को समेटने के लिए बेहतर कंप्रेशन एल्बो रिद्म्स उपलब्ध नहीं थे। एमपीथ्री ने संगीत को ऑनलाइन बनाना बेहद आसान कर दिया है। यह एक ज़बरदस्त चीज़ थी क्योंकि इंटरनेट के चलते पूरी दुनिया के लोग एक जैसा संगीत सुन सकते थे और आपस में इसका लेन-देन भी कर सकते थे। दूसरे ढंग से कहें तो लोग हमेशा से अपने संगीत ख़ज़ाने के 'हीरों' की अदला-बदली करना चाहते थे।

लेकिन इसी दौरान 1999 में अमेरिका का एक छात्र, शॉन फ़ाइनिंग - यार दोस्त उसे नेपस्टर कहते थे, ने महसूस किया कि मामला इतना भी सीधा नहीं है।

फ़ाइनिंग की समस्या यह थी कि वह इच्छित काम को आसान ढंग से करने का तरीक़ा नहीं ढूँढ पा रहा था। मतलब यह कि वह अपने संगीत को दूसरे लोगों के साथ बाँटना चाहता था। उन दिनों यह काम न्यूज़ ग्रुप्स और चैट सिस्टम पर किया जाता था। यह काम काफ़ी जटिल था और इसमें बहुत वक़्त ज़ाया होता था। ख़ैर अंततः फ़ाइनिंग के हाथ एक तरीक़ा लगा जिससे संगीत का आदान-प्रदान आसान हो गया। इस तरीक़े के तहत लोगों को एक एप्लीकेशन डाउनलोड करनी होती थी। यह एप्लीकेशन उन्हें लोकल डिस्क पर मौजूद डायरेक्टरी को अन्य लोगों के साथ बाँटने में मदद करती थी। इसके ज़रिए

MP3
MP3
MP3

लोग कलाकारों के नाम या गाने सर्च कर सकते थे। सारी चीज़ कुछ इस ढंग से काम करती थी कि कंप्यूटर से जुड़े तमाम लोग सारी डायरेक्टरियों तक पहुँच सकते थे और कोई भी मनपंसद गाना डाउनलोड कर सकते थे। फ़ाइलों के ऑनलाइन आदान-प्रदान के क्षेत्र में यह बहुत बड़ी कामयाबी थी।

यह खोज बहुत जल्दी ही लोगों के दिल-ओ दिमाग़ पर छा गयी। कारण साफ़ था। इसके माध्यम से हर तरह, हर लेबल का, हर कंपनी और हर दौर का संगीत उपलब्ध हो जाता था। अपनी लोकप्रियता के चरम पर यह खोज लोगों की परेशानी का कारण भी बनी। एक समय तो ऐसा था कि लोग-बाग सर्च तो कुछ करना चाहते थे और खोजने कुछ और लगते थे। यानी वे एक के एक बाद नए गानों में जा उलझते थे। तो यह था आई ट्यूंस का म्यूज़िक स्टोर। आम स्टोरों से दस गुनी क्षमता वाला। लेकिन चार साल बाद ही नज़ारा बदल गया। कुल मिलाकर फ़ाइनिंग को लगा कि संगीत तक इलेक्ट्रॉनिक ढंग से पहुँचने का एक आसान तरीक़ा ढूँढने की ज़रूरत है। इंटरनेट पर काम करने वाले लोगों को यह ज़रूरत सबसे पहले महसूस हुई। इसे एमपीथ्री का प्रताप ही कहा जाएगा कि आख़िरकार लोगों को संगीत का एक ऑनलाइन आदान-प्रदान का तरीक़ा मिल ही गया। आई ट्यूंस म्यूज़िक स्टोर जो काफ़ी बाद में शुरू किया गया। मुख्यत: संगीत उद्योग का ही सूरमा माना गया। सही मायने में लोगों की ज़रूरतों को पूरा करने में उसे चार साल लगे।

संगीत के इस ग़ैरक़ानूनी ऑनलाइन आदान-प्रदान से निपटने की पहली कोशिश सीडी को 'कॉपी प्रोटेक्ट' करने के रूप में सामने आयी। इसका मतलब था ऑडियो सीडी को इस ढंग से दोषपूर्ण बनाना ताकि वे कॉम्पैक्ट डिस्क के मानकों पर खरी न उतर सकें और कंप्यूटर की पकड़ में न आ सकें। हालत यह थी कि बहुत सारे संगीत यंत्र जैसे कार प्लेयर, डीवीडी प्लेयर आदि भी इन सीडी को नहीं चला पाते थे। जहाँ तक संगीत उद्योग की प्रतिक्रिया की बात है उसने संगीत के इस ऑनलाइन आदान-प्रदान की लोकप्रियता की अनदेखी करते हुए कुछ ऐसा तरीक़ा अपनाया कि ग्राहकों के नए डीवीडी प्लेयर या कार प्लेयर बेकार हो जाएँ। लेकिन इस दौरान संगीत उद्योग लगातार इस बात की दलील देता रहा कि लोग पायरेसी के कारण सीडी नहीं ख़रीद रहे हैं।

जैसा कि मौजूदा दुनिया में लगभग हर चीज़ के साथ हुआ है, वैश्वीकरण से उपभोक्ताओं के सामने दुनिया भर का मनोरंजन क्षेत्र खुल गया है। अमेरिका के लोग खुद को इस मामले में भाग्यशाली ही कहेंगे कि फ़िल्मों, संगीत और टेलीविज़न के ऐसे कार्यक्रम उन्हें काफ़ी पहले ही देखने को मिल जाते हैं जबकि क़ानूनी तौर पर ये कार्यक्रम उनके क्षेत्र में एक समय के बाद ही पहुँच पाते हैं।

ख़ैर यह बात तब की है जब पायरेसी संगीत की दुनिया में एक अनजानी बात थी। 1999 में एक फ़्रांसीसी हैकर जिरोंग रोता ने माइक्रोसॉफ़्ट के एक कोड को बदल कर नया रूप देने में सफलता हासिल की। रोता ने जो फ़ॉरमेट गढ़ा उसे डिवएक्स फॉरमेट कहा गया। इस फॉरमेट की ख़ासियत यह थी कि इसमें 6 गीगाबाइट आकार की डीवीडी फ़िल्मों को 700 एमबी में ढाला जा सकता था। डिवएक्स फ़ाइल फ़ॉरमेट तुरन्त ही लोगों की कल्पना पर छा गया। इस फ़ॉरमेट में कंप्रेशन की अकूत क्षमता थी और टेलीविज़न के पर्दे पर भी यह देखने में काफ़ी आकर्षक लगता था। इसकी एक ख़ासियत और भी थी। इसके ज़रिए सिनेमा हॉल में दिखायी जा रही फ़िल्मों की भी सीडी बनायी जा सकती थी। अमेरिका की हालिया रिलीज़ फ़िल्में पाइरेसी की बदौलत ही पूरी दुनिया की सैर कर रही थीं।

फ़िल्म को रिलीज़ करने के साथ एक और समस्या जुड़ी थी। यह समस्या डीवीडी फ़िल्मों के रूप में सामने आयी। इस फ़ॉरमेट को पूरी दुनिया में हाथोंहाथ लिया गया। इसके चलते वीडियो टेप से निजात मिल गयी थी। हम जानते हैं कि वीडियो टेप के साथ कई तरह की मुश्किलें थीं। एक तो वीडियो फ़िल्मों की विज़ुअल क्वॉलिटी काफ़ी ख़राब थी, साथ ही इससे बनायी जाने वाली कॉपी की गुणवत्ता का स्तर काफ़ी घटिया होती थी। इन दिक़्क़तों के बीच एक ऐसा हल निकला जिसके बारे में किसी ने

सोचा भी नहीं था। इस बात को रीज़न एनकोडिंग का नाम दिया गया।

जैसे सिनेमा हॉल में दिखायी जाने वाली फ़िल्मों पर रोक-टोक का मामला रहता था वैसे ही डीवीडी की एनकोडिंग के ज़रिए कुछ ऐसा इंतज़ाम किया गया ताकि लोग सिनेमा हॉल में रिलीज़ होने से पहले फ़िल्मों को डीवीडी पर न देख पाएँ। लेकिन जनता सब्र करने के लिए तैयार नहीं थी। जैसे इंटरनेट पर म्यूज़िक की फ़ाइलों का ग़ैरक़ानूनी आदान-प्रदान किया जाता था वैसे ही यह भी मान लिया गया कि सभी फ़िल्मों को हर क्षेत्र में एक ही समय रिलीज़ किया जाए। बेशक ऐसा कभी नहीं हुआ जिसका कारण यह था कि अलग-अलग क्षेत्र में फ़िल्मों का रूप अलग-अलग होता था।

उदाहरण के लिए किसी डीवीडी क्षेत्र में कोई फ़िल्म रिलीज़ करने के लिए एक पब्लिशिंग कंपनी की ज़रूरत होती है, साथ ही उस क्षेत्र में ऐसी कोई दूसरी कंपनी नहीं होनी चाहिए जो इस विषयवस्तु या सामग्री पर एकाधिकार रखती हो। अगर दोनों के बीच कोई मतभेद हो और वे इसे प्रकाशित न करना चाहे तो उपभोक्ता के लिए समस्या शुरू हो जाती है। अगर किसी एशियाई फ़िल्म को यूरोपीय क्षेत्र के लिए एनकोड कर दिया जाए तो यह फ़िल्म इस क्षेत्र से बाहर के लोगों के लिए अनुपलब्ध हो जाती है। लेकिन यहाँ भी पायरेसी ने मामला आसान बना दिया। पहले यह हल एक प्रोग्राम के रूप में सामने आया जिसे 'डीईसीईएसएस' कहा गया। इस प्रोग्राम के ज़रिए डीवीडी की एनकोडिंग को बदला जा सकता था। बाद में यह मामला एशियाई डीवीडी यंत्रों की बदौलत और भी सुगम हो गया। इन सस्ते एशियाई डीवीडी प्लेयरों में डीवीडी की रीजन एनकोडिंग का ध्यान ही नहीं रखा जाता था।

पायरेसी के चलते लोगों के लिए छुट्टी के दिन वैसी डीवीडी फ़िल्में देखना और आसान हो गया जो दूसरे क्षेत्रों में रिलीज़ की गयी थी या जिन्हें ऑनलाइन हासिल किया गया था। इन फ़िल्मों को लोग अपने क़ानूनी ढँग से ख़रीदे गए डीवीडी प्लेयर्स पर देख सकते थे।

तो ज़ाहिर है कि जो बात फ़िल्मों पर लागू होती है वही टेलीविज़न पर दिखाए जाने वाले धारावाहिकों पर भी फ़िट बैठती है। दुनिया के लोग सौप्रेनोस से लेकर 24, 6 फ़ीट अंडर और सीएसआई जैसी चीज़ों को देखना चाहते हैं, और तत्काल देखना चाहते हैं। दुर्भाग्य की बात है कि लोगों को ये सब देखने के लिए ब्रॉडकास्टिंग स्टेशनों की दया पर निर्भर रहना होगा। वे ये चीज़ें तभी देख पाएँगे जब ये ब्रॉडकास्टिंग स्टेशन विधिवत रूप से अलग-अलग देशों में प्रसारण करने लगेंगे। आम तौर पर होता यह है कि अमेरिका में शुरू किए जाने वाले टीवी कार्यक्रमों और इन कार्यक्रमों को दुनिया भर में रिलीज़ करने के बीच एक ख़ासा लंबा वक़्त लगता है। ख़ुशक़िस्मती की बात है कि अमेरिका में पायरेसी का तंत्र इन प्रसारणों पर तत्काल ही क़ब्ज़ा कर और उन्हें ऑनलाइन बनाकर पूरी दुनिया में उपलब्ध करा देता है। आज तो हालत यह हो चुकी है कि बिट टोरेंट और आरएसएस जैसी नयी तकनीक के चलते कुछ ख़ास कार्यक्रमों को देखने के लिए तो बाक़ायदा सदस्यता लेनी पड़ती है। इस तकनीक के ज़रिए ग्राहक को उसका पसंदीदा टेलीविज़न कार्यक्रम इंटरनेट पर उपस्थित होते ही देखने को मिल जाता है। इस अर्थ में देखा जाए तो पायरेसी लोगों को वह सब प्रदान करती है जो वे देखना चाहते हैं। पायरेसी उन्हें इन कार्यक्रमों को मनचाहे समय पर देखने की सहूलियत भी प्रदान करती है।

इंटरनेट से एक नयी चीज़ संभव हुई है। इसके ज़रिए पूरी दुनिया के लोग एक दूसरे से संपर्क साध सकते हैं। और इसके लिए उन्हें एक दूसरे से मिलने की ज़रूरत भी नहीं होती। यह सचमुच एक बड़ी चीज़ है। लेकिन यदि इसी तर्क को सांस्कृतिक उत्पादों, ख़ास तौर पर मनोरंजन के उत्पादों पर लागू करके देखें तो हम पाते हैं कि ऐसी चीज़ों को चोरी का मामला बनाकर पेश किया जाता है। अपने किसी दोस्त को सीडी या डीवीडी देना क़ानूनी तौर पर ग़लत नहीं समझा जाता लेकिन इस सीडी की इलेक्ट्रॉनिक कॉपी को दुनिया के किसी दूसरे हिस्से में भेजना ग़ैरक़ानूनी माना जाता है।

मनोरंजन उद्योग की दलीलों से हम पहले ही परिचित हैं। पायरेसी को मनोरंजन उद्योग आपराधिक

काम मानता है। उसे चोरी की संज्ञा दी जाती है। उसे अवैध बताया जाता है। कहा जाता है कि पायरेसी मनोरंजन उद्योग को नुक़सान पहुँचा रही है। जैसा कि पीछे दिए गए उदाहरणों से ज़ाहिर होता है लगता तो यह है कि मनोरंजन उद्योग ख़ुद ही अपने-आप को बर्बाद कर रहा है। बाज़ार की माँग की अनदेखी करके और बौद्धिक संपदा क़ानून के पचड़ों में फँसकर यह उद्योग ख़ुद ही वक़्त की रफ़्तार में पिछड़ने लगा है। लाइसेंसिंग डील जैसे मुद्दे उठाकर मनोरंजन उद्योग ग्राहकों के हितों की अनदेखी कर रहा है। सच बात तो यह है कि पायरेसी ने स्वयं को तकनीकी और नवाचार के स्तर पर मनोरंजन उद्योग से ज़्यादा बेहतर और सामयिक सिद्ध किया है।

बाज़ार की प्रतिस्पर्धा की बात शुरू करके उपभोक्ताओं की माँग पर खरा न उतरने से होता यह है कि लोग-बाग अपनी समस्याओं के हल और ढँग से तलाशने लगते हैं।

पायरेसी की कामयाबी का एक बड़ा हिस्सा इस बात में निहित है कि पायरेसी करने के लिए आपको कुछ ख़र्च नहीं करना पड़ता। पायरेसी का एक दूसरा महत्त्वपूर्ण हिस्सा भी है जिसे उद्योग जगत स्वीकार नहीं करना चाहता और वह यह है कि पायरेसी सफलतापूर्वक काम करने वाली तकनीक है। सच्चाई यह है कि मनोरंजन जगत भविष्य के जो वायदे गढ़ता है पायरेसी उन्हें आज ही पूरा करने का दम-ख़म रखती है।

अनुवाद: नरेश गोस्वामी